कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन

दिनांक

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

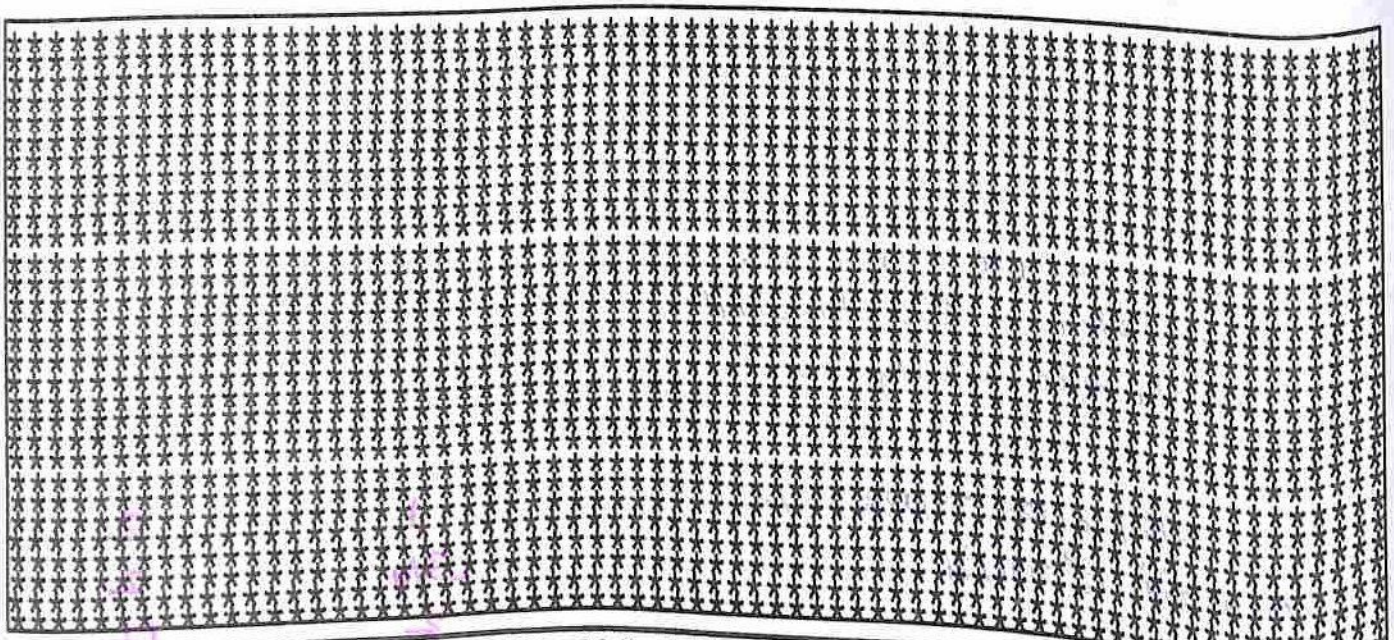

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, कैलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्यामेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न सख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"जिस राष्ट्र को अपनी भाषा व साहित्य के गौरव का ज्ञान नहीं होता, वह राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता है।"

— डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

खण्ड – 1

अपठित गद्यांश – 1

3.1 उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक – महाकवि कबीर है।

3.2 कबीर का व्यक्तित्व बहुत ऊँचा था, इसी कारण उनके सामने कोई टिक भी नहीं पाता था।

3.3 कबीर ने समाज व धर्म की बुराइयों को निकालकर सबके सामने रखा, उन्होंने सांप्रदायिकता, बाह्याडंबर, भेदभाव आदि का विरोध किया, उन्होंने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया तथा हिंदू – मुस्लिम समन्वय को बढ़ावा दिया। इस प्रकार, उनका धर्म के प्रति उदार दृष्टिकोण था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अपठित पद्यांश

उ० 4. भारतवासियों के प्रति कवि आक्रोशित है क्योंकि भारतवासी अभी-भी सजग नहीं हुये हैं, उनमें साहस व वीरता का अभाव है।

उ० 5. जब हमारी वीरता समाप्त हो जाती है, तब हममें पुण्य का क्षय और स्वार्थ का उदय होता है।

उ० 6. धर्म का पालन वीर बनकर ही किया जा सकता है। तलवार अर्थात् वीरता ही पुण्य व धर्म की पालक है।

2403-2

उ० 7. निबन्ध

(ख) राजस्थान में गहराता जल-संकट

[i] प्रस्तावना :-

'जल ही जीवन है'

उपर्युक्त सूक्ति से यह तो पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि जल के बिना जीवन संभव नहीं हो सकता। रहीम जी भी जीवन के लिए जल को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते हैं, उन्हीं के शब्दों में

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून।।"

अतः हमें जल संरक्षण की महती आवश्यकता है।

[ii] जल संकट के कारण :—

जल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। विशेषकर राजस्थान में तो यह समस्या अत्यन्त विकट है, यहाँ की मरुभूमि में जल की कमी सदैव ही बनी रहती है।

राजस्थान में जल-संकट गहराने के कई कारण हैं, यहाँ भूमिगत जल का स्तर निम्न है, स्थानीय स्तर पर प्रचलित जल-स्रोतों की दुर्दशा हो गई है। बड़े-बाँध, जो जल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इनमें भी मिट्टी की गाद बढ़ गई है, जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जिससे जल का उपभोग स्तर भी बढ़ रहा है, वर्षा की कमी होने के कारण यह समस्या अब चीख-चीख कर हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही है। इसलिए शीघ्रातिशीघ्र इस जल-संकट की समस्या के निराकरण का उपाय ढूंढना चाहिये,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

[iii] जल-संकट निराकरण के उपाय:-

जल-संकट की गूढ़ समस्या बढ़ रही है, इसी कारण इसके निवारण के उपाय भी किये जा रहे हैं, राष्ट्रीय स्तर पर केन्द्र सरकार द्वारा जल-क्रांति अभियान चलाया जा रहा है तो वहीं दूसरी ओर राजस्थान स्तर पर राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन योजना/अभियान का सूत्रपात किया है।

इस अभियान की अवधि चार वर्ष होगी जिससे 21 हजार गाँव लाभान्वित होंगे, इसमें स्थानीय स्तर पर प्रचलित जलस्रोतों का नवीनीकरण व सुदृढ़ीकरण किया जायेगा तथा इनके जल-प्राप्ति मार्ग में आ रहे अवरोधों को समाप्त किया जायेगा,

साथ ही भूमिगत जल-स्तर में वृद्धि व गुणवत्ता में सुधार का कार्य किया जायेगा। इसमें ग्रामीणों, स्थानीय साहूकारों, विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं आदि के सहयोग से जल-ग्रहण क्षेत्रों को प्राकृतिक संसाधन मानते हुए उपचार किया जायेगा।

जल स्वावलम्बन अभियान के अतिरिक्त

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

हमें भी जल-संरक्षण में अपना योगदान देना चाहिए, हमें वर्षा जल को व्यर्थ बहने नहीं देना चाहिए, हमें वर्षा-जल संरक्षण तरीके अपनाने चाहिए, हमें पानी का समुचित उपयोग करना चाहिये, घरेलू कार्यों में पानी को व्यर्थ नहीं बहने देना चाहिए, साथ ही, भू-जल संरक्षण भी करना चाहिए।

सिंचाई में भी हमें वे तरीके अपनाने चाहिए जो वर्षा जल को व्यर्थ न जाने दें। इसमें ड्रॉप-ड्रॉप सिंचाई विधि अत्यंत उपयोगी है।

[V] उपसंहार :-

अब यह तो स्पष्ट हो गया है कि जल हमारे जीवन का आधार है। मानव के पंचतत्वों से बने शरीर में भी जल महत्वपूर्ण भाग रखता है। अतः हमें जल का संरक्षण करना चाहिए क्योंकि -

"जल है तो कल है"

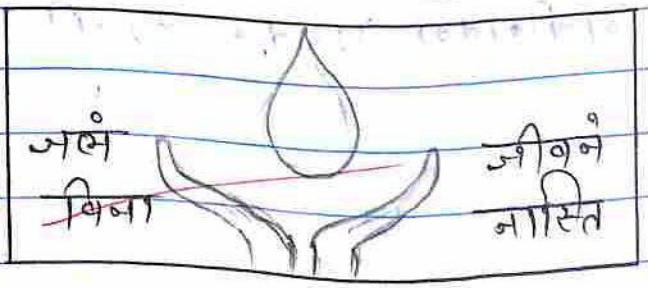

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
~~उ० 8~~,	उ० 8.	व्यावसायिक पत्र

पत्रांक – 13/2018 दिनांक – 17-03-2018

प्रेषक:-
मनोहर पुस्तक भण्डार,
कुबेर गेट,
रतलाम

प्रेषिति:-
पुस्तक महल,
चान्दनी चौक,
दिल्ली।

विषय:- नवीनतम पुस्तक सूची भेजने हेतु।

महोदय,
रतलाम में मेरी चिर-प्रतिष्ठित पुस्तकों की दुकान है, मैं मेरी दुकान को विस्तार कर आपसे भी पुस्तकें क्रय कर बेचना चाहता हूँ। अतः उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि कृपया आप मुझे शीघ्रातिशीघ्र नवीनतम पुस्तक सूची भेजने का कष्ट करें।

भवदीय
दीपक।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड – 3

उ॰ 9. कर्म के आधार पर क्रिया के भेद :-

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं -

[i] सकर्मक क्रिया
[ii] अकर्मक क्रिया

[i] सकर्मक क्रिया :- वह क्रिया जिसका फल कर्त्ता के स्थान पर कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
→ सकर्मक क्रिया के साथ उसका कर्म भी उपस्थित होता है। जैसे -
• राम आम खाता है।

[ii] अकर्मक क्रिया :- वह क्रिया जिसका फल कर्त्ता पर पड़े तथा जिसके साथ उसका कर्म न हो, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे -
• सीता जाती है।

उ॰ 10. राधा ने मिठाई खाई।
→ उपर्युक्त वाक्य में राधा कर्त्ता कारक है तथा मिठाई कर्म कारक है।
राधा → कर्त्ता कारक
मिठाई → कर्म कारक
→ काल :- उपरोक्त वाक्य भूतकाल में है।
→ वाच्य :- उपरोक्त वाक्य में कर्मवाच्य है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ॰ 11. बहुव्रीहि समास :- वह समास जिसमें दोनों पद अप्रधान हो तथा किसी अन्य पद की प्रधानता हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे -

लंबोदर → लंबा है उदर जिसका वह - गणेश

दशानन → दस हैं आनन जिसके वह - रावण

उ॰ 12. शुद्ध वाक्य :- [क] धोबी ने कपड़े अच्छे धोए।

[ख] सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे।

उ॰ 13.

मुहावरा		अर्थ
[क] बालू से तेल निकालना	→	व्यर्थ परिश्रम करना
[ख] अंधे की लाठी होना	→	एकमात्र सहारा होना

उ॰ 14.

लोकोक्ति		अर्थ
चट मंगनी, पट ब्याह	→	जल्दी - जल्दी सारा काम निपटाना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2003 – 4

उ. 15. सप्रसंग व्याख्या – 1

संकेत :- सीत को - - - - - - - छिपाई के।

प्रसंग :-

प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के 'ऋतुवर्णन' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता सेनापति हैं। मूलतः यह कवित्त सेनापति की रचना कवित्त रत्नाकर से संकलित है।

इस कवित्त में सेनापति ने शीत ऋतु का एक सेनापति के रूप में वर्णन किया है।

व्याख्या :-

कवि कहता है कि जब शीत ऋतु ने अपनी सेना के साथ जन-जीवन पर आक्रमण किया तो अग्नि का ताप भी ठंडा पड़ गया तथा सूर्य निस्तेज हो गया। ठण्डी हवा तो ऐसी चुभ रही है मानो शीत ऋतु की सेना के तीर हों। अब तो ऐसा लगता है कि शीत ऋतु से भयभीत होकर गर्मी घरों के कोनों में जाकर छिप गई है अर्थात् घरों में ही शीत से कुछ रक्षा हो रही है। लोग आग पर गिर-पड़ रहे हैं। उसके जरा सा सुलगते ही लोग आग पर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

तापने लगते हैं, आग तापने वालों की आँखों से धुएँ के कारण जल बह रहा है मानो शीत ऋतु से भयभीत होकर रो रहे हों। आग के जरा सा सुलगते ही लोग उस पर झुककर तापने लगते हैं, ये देखकर ऐसा लगता है मानो आग को शीत से भयभीत देखकर उसे अपनी छातियों के नीचे छिपा रखा हो।

विशेष:- [i] पद्यांश की भाषा सरस प्रवाहमयी ब्रज भाषा है।

प्रस्तुत पद्यांश प्रतीकात्मक शैली में रचित है

[ii] पद्यांश में कवित्त छन्द है।

[iii] मानो शीत जानि .... पानि पंक्ति में

[iv] उत्प्रेक्षा अलंकार है।

"निबल अनल गयौ सूरि सियराइ कै"

[v] पंक्ति में लक्षणा शब्द-शक्ति छटा बिखेर रही है।

सप्रसंग व्याख्या-2

उ. 16. संकेत:- मियाँ .... गई।

प्रसंग:-

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के 'ईदगाह' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पाठ के रचयिता 'प्रेमचन्द' हैं। इन पंक्तियों में लेखक ने ... द्वारा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मेले में खरीदे गए वकील की दुर्दशा होने का वर्णन किया है।

व्याख्या:-

लेखक कहता है कि नूरे ने जिस वकील को मेले से खरीदा, उसका अन्त उसकी प्रतिष्ठा से भी ज्यादा गौरवमय हुआ, वकील हर कहीं तो बैठ नहीं सकता, वह तो प्रतिष्ठावान होता है, उसे कहीं जमीन पर तो नहीं बैठा सकते। उसके लिए दीवार में दो खूँटियाँ गाड़कर उसपर एक लकड़ी का पटरा रखा। उस पटरे पर कागज बिछाया गया जो कालीन का काम कर रहा था। वकील को भी उसी तरह पटरे पर बैठाया जैसे राजा भोज सिंहासन पर बैठते हैं। इसके बाद नूरे ने उन्हें पंखा झलाना शुरू किया यह सोचते हुए कि अदालतों में तो कई बिजली से चलने वाले व कुई अन्य प्रकार के पंखे होते हैं तो यहाँ एक मामूली पंखा ही सही, होना तो चाहिये क्योंकि पंखे के बिना तो कानून पर बहस करते-करते सिर गर्म हो जाएगा। नूरे बाँस के पंखो से हवा कर रहा था पर अचानक या तो पंखे की हवा से, या पंखा लगने से वकील पटरे से नीचे आ गिरा और टूट गया। कुछ देर बाद जोर-२ से नूरे रोया और उसके बाद वकील की मिट्टी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अन्य मिट्टी के ढेर पर डाल दी गई।

विशेष:- [i] प्रस्तुत गद्यांश सरस प्रवाहमयी खड़ी बोली हिन्दी भाषा में रचित है।
[ii] गद्यांश वर्णनात्मक शैली में रचित है।
[iii] वकील के खिलौने का एक असली प्रतिष्ठित वकील के रूप में चित्रण हुआ है।

उ० 17.

पहली कियाँ उपाव, दव दुसमण आमय दटैं।
पछेड हुआं बिसवाव, रोआ चालै राजिया॥

प्रस्तुत सोरठा 11 व 13 मात्रा पर यति वाला सोरठा छन्द है जो डिंगल भाषा में राजस्थानी कवि कृपाराम खिड़िया द्वारा रचित है।

इस सोरठे में कवि हमें उपदेश देता है कि हमें कुछ चीजों का उपचार पहले ही कर लेना चाहिये। अन्यथा ये वस्तुऐं बाद में हमारे कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगी।

कवि इसमें आग, शत्रु और रोग को पहले ही उपचार योग्य बताता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कवि कहता है कि आग प्रारंभ में कम होती है। उसको प्रारंभ में ही बुझा देना चाहिये, अन्यथा बाद में ये आग प्रचंड रूप धारण करके हमारे लिए कई हानियों की श्रृंखला का निर्माण कर देती है।
इसी प्रकार, कवि शत्रु और रोग का भी प्रारंभिक अवस्था में ही उपचार करना सही बताता है। शत्रु को प्रारंभिक अवस्था में ही किसी तरीके से रोक देना चाहिये तथा रोग का भी पहली स्थिति में ही उपचार करा लेना चाहिये।

निष्कर्षत: कवि हमें बताना चाहता है कि कोई भी विषम वस्तु हो जो हमारे विरुद्ध हो, उसको प्रारंभ में ही निपटान कर देना चाहिए, अन्यथा, बाद में ये हमारे विनाश में लगती है।

उ. 18. लोक सन्त पीपा निर्गुण भक्ति काव्यधारा से संबंधित थे। यद्यपि वे प्रारंभ में मूर्ति पूजक थे तथा देवी दुर्गा की उपासना करते थे, परन्तु बाद में इन्होंने स्वामी रामानन्द का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया तथा निर्गुण निराकार परम ब्रह्म के उपासक हो गए थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अन्य निर्गुण भक्ति से संबंधित सन्तों की तरह ही, उन्होंने भी बाह्य आडंबरों, समाज में व्याप्त रूढ़ियों तथा दुर्व्यसनों का विरोध किया।

वे परमात्मा को निराकार व अजन्मा मानते थे। उनके मत में परमात्मा सृष्टि को बनाने वाला तथा सबका पिता है।

उन्होंने भक्ति भावना द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता तथा रूढ़ियों को तोड़ने की भावना जगाई।

अन्य निर्गुण परंपरा के सन्तों की ही तरह उनका भी यही मानना था कि "जो ब्रह्माण्डे सोई पिण्डे" अर्थात् परमात्मा और आत्मा एक ही है

उन्होंने निर्गुण भक्ति परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मांसाहार का विरोध किया और कहा कि-

"जीव मार जीमण करे, खाता करे बखाण।
पीपा परतख देख ले, थाली मांह मसाण।"

वे समानता के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि ब्राह्मण और शूद्र में कोई बड़ा छोटा नहीं है।

एके मारग तें आया, एके मारग जाही।
एको मात-पिता सबही के, विप्र शूद्र कोऊ नाहि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इस प्रकार सन्त पीपा राजा होते हुए भी
निर्गुण सन्त परंपरा के से संबंधित हो गए
और निर्गुण भक्ति काव्यधारा को अपने
उपदेशों और ग्रंथों से सुसज्जित किया।

उ० 19. गोपी कृष्ण प्रेम में पूर्णतः लीन हो गई थी
वह कृष्ण के सौंदर्य के प्रति आकर्षित हो गई
थी, उसकी मधुमक्खी रूपी आँखें कृष्ण के सौंदर्य
वह कहती है कि रूपी मधु में जाकर फँस गई थीं, जबकि
सच्चाई यह थी कि वह कृष्णसे के प्रति अगाध
प्रेम करने लगी थी, वह अपने चंचल मन से हार
गई थी, और कृष्ण प्रेम ने उसे जीतकर अपनी
दासी बना लिया था।

उ. 20. कल और आज कविता में कवि नागार्जुन ने
वर्षा ऋतु और ग्रीष्म ऋतु का अत्यन्त सजीव
वर्णन किया है, ग्रीष्म ऋतु में किसानों के उदास
चेहरे, चिड़ियों का खलिहान, पथराए हुए खेत,
उदास और बरसाता आसमान आदि सभी चित्रों
का वर्णन किया है, वहीं वर्षा ऋतु की काली
घटायें, थिरकते मोर, बूँदा-बूँदी, झींगुरों की
प्रसन्नता आदि चित्रों का भी सजीव वर्णन किया है,
दोनों ऋतुओं का कोई भी पक्ष कवि की दृष्टि से
नहीं छूटा है, इस प्रकार कवि ने इन ऋतुओं की
हर स्थिति का सजीव चित्र आँखों के सामने
साकार किया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ. 21. कन्यादान कविता कवि ऋतुराज की भारतीय नारी के प्रति संवेदनशीलता की परिचायक है। इस कविता के माध्यम से कवि ने रूढ़ियों में जकड़ी हुई भारतीय नारी को स्वतंत्र करने का प्रयास किया है। एक माँ के माध्यम से नारियों को जीवन में उपयोगी शिक्षायें कवि ने दी हैं तथा उन्हें जीवन में स्वाभिमान से रहने का उपदेश दिया है।

उ. 22. 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध भारतेंदु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित है। इसमें यह निबंध भारतेन्दु काल की विकासशील खड़ी बोली हिंदी गद्य भाषा में रचित है। साथ ही, इसमें कवि ने हास्य व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों का वर्णन किया है पर कठोर चुटीले व्यंग्य किये हैं।

उ. 23. महादेवी के घर पहले जो ग्वाला दूध देने आता था, उसे गौरा का दूध दुहने को नियुक्त किया गया। किन्तु उस ग्वाले ने गुड़ की डली में लपेटकर गौरा को सुई खिला दी थी जो रक्त संचार के साथ उसके हृदय की ओर बढ़ रही थी। अन्त में सुई ने गौरा के हृदय को भेद दिया

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

और गोरा की मृत्यु हो गई।

उ० 24. हामिद के पास तीन ही पैसे थे। उन तीन पैसों से वह खिलौने भी खरीद सकता था, मिठाई भी खा सकता था व चरखी पर बैठकर चक्कर भी काट सकता था, लेकिन उसे अपनी दादी का ख्याल आया। तवे से रोटियाँ उतारते वक्त उसके हाथ जल जाते थे। इसलिए हामिद ने संवेदनशील होते हुए चिमटा खरीदने का निर्णय किया।

उ० 25. 'यामिनी ...' पंक्ति में सेनापति ने वर्षा ऋतु का वर्णन किया है।

उ० 26. 'मातृ-वन्दना' कविता में कवि ने अपने श्रम का श्रेय मातृभूमि भारत को दिया है।

उ० 27. भारतीय अध्यात्म के प्रतिनिधि स्वामी विवेकानन्द ने कन्याकुमारी में तीनों सागरों के संगम पर स्थित भारतीय स्थल भाग की आखिरी चट्टान पर समाधि लगाई थी। यही कन्याकुमारी का आध्यात्मिक महत्व है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	उ० 28.	परनिन्दा के विषय में याद ने कहा है कि परनिंदा वही करता है जिसके हृदय में राम का निवास नहीं तथा जो राम का विरोधी है
	उ० 29. (i)	तुलसीदास :- महाकवि तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के बांदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ सन् 1532 ई० मे हुआ। इनके पिता आत्माराम व माता हुलसी थी। इनका विवाह रत्नावली नामक विदुषी से हुआ। इनके गुरु महात्मा नरहरिदास बताये जाते है

इन्हों ये भक्तिकालीन सगुण काव्यधारा से संबोधित थे। ये अवधी व ब्रज दोनों के पंडित थे, इन्होंने अपने विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ रामचरित मानस की रचना संवत् 1631 मे अयोध्या में आरंभ की। ये आदर्शवादी कवि थे तथा इन्होंने श्रीराम का चरित्र अनुकरणीय रूप मे प्रस्तुत किया है। ये रामभक्त कवि थे। इनकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित ~~थी~~ हैं -

कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली रामाज्ञाप्रश्नावली, जानकी-मंगल, पार्वती मंगल, रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनि आदि।

→ सन् 1623 मे इनकी मृत्यु हो गई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

[ii] मुन्शी प्रेमचन्द :-

प्रेमचन्द का मूल नाम धनपतराय था। इनके पिता मुंशी अजायब लाल व माता आनन्दी देवी थी। इनका जन्म 1880 ई. में उत्तरप्रदेश के वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ।

उन्होंने उर्दू व हिंदी दोनों भाषाओं में रचना की है। ये उर्दू में नवाबराय नाम से लिखते थे। सर्वप्रथम इनका कहानी संग्रह 1908 में सोजे वतन प्रकाशित हुआ। परंतु देशभक्ति की भावनाओं की अधिकता के कारण इस पर रोक लगा दी गई। बाद में ये हिन्दी में प्रेमचन्द नाम से लिखने लगे। इनकी प्रमुख रचनायें निम्न हैं-

कहानी संग्रह → मानसरोवर (8 भाग)
उपन्यास → गोदान, गबन, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला,
नाटक → कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी
पत्रिका → माधुरी, हंस, मर्यादा, जागरण

→ सन् 1936 में इनकी मृत्यु हो गई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ. 30.

(i)   → ओवरटेक निषेध है।

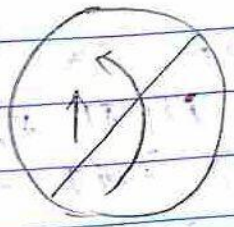

(ii)   → आगे सड़क नहीं है।

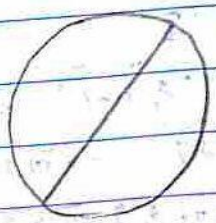

(iii)   → दायाँ मोड़ निषेध।

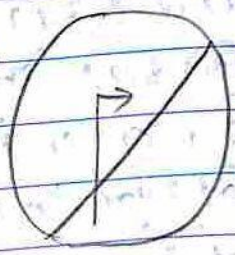

(iv)   → दोनों ओर यातायात निषेध।

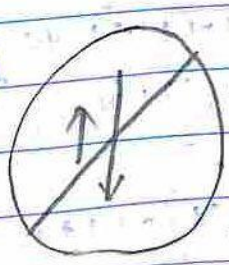

"समाप्त"

BSER 164/2018